अबाध

मृत्यु को ललकारने वाला मुक्तिदाता

डॉ. डेविड प्लैट

16 अप्रैल, 2006

मृत्यु को ललकारने वाला मुक्तिदाता

प्रकाशितवाक्य 5

यदि आपके पास बाइबल है तो मेरे साथ बाइबल की अन्तिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को निकालें।

हमारी संस्कृति में आज बहुत सारे लोग यीशु के बारे में बात करते हैं। आप में से बहुत से लोग जानते हैं कि *दी दा विंची कोड* नामक पुस्तक में यीशु के बारे में विचार दिए गए हैं। इसकी करोड़ों प्रतियाँ बिक चुकी हैं और इस पर फिल्म भी बनी है। अतः बहुत सारे लोग इसमें बताए गए यीशु से संबंधित मुद्दों के बारे में बात करते हैं। यहूदा का सुसमाचार भी काफी प्रचलित रहा है और वह विचार जिसे वह यीशु के बारे में बढ़ावा देता है।

आज हमारी संस्कृति में बहुत सारे लोग यीशु के बारे में बात कर रहे हैं लेकिन मार्ग में कहीं हमारी संस्कृति में हमें यह विचार आता है कि हम इसे पुनः परिभाषित कर सकते हैं कि यीशु कौन है। हम यीशु को वह बना सकते हैं जो हम उसे बनाना चाहते हैं और एक प्रकार से बाइबल की सारी बातों को बाहर फेंक सकते हैं और यीशु को वह बना सकते हैं जो हम उसे बनाना चाहते हैं। मेरे विचार से इस बात को पुनः परिभाषित करने की कोशिश करना अत्यधिक खतरनाक है कि यीशु कौन है।

मैं आपको एक उदाहरण बताता हूँ। मैं चाहता हूँ आप कल्पना करें कि कलीसिया में आराधना के बाद आप घर जाते हैं और दिन का बाकी समय आप अपने परिवार और दूसरे लोगों के साथ बिताते हैं। मान लीजिए कि कोई ऐसा व्यक्ति आपके पास आता है जो कलीसिया में नहीं आया था और आप से पूछता है, "आज सभा कैसी थी; आज कलीसिया कैसी थी?"

और आप उसे संगीत के बारे में बताने लगते हैं कि संगीत कितना अच्छा था और सारे गीत भी; और फिर आप बताने लगते हैं कि तस्वीरें कितनी अच्छी थीं। और कल्पना करें, कि फिर आप कहते हैं वहाँ डेविड प्लैट नामक एक व्यक्ति ने प्रचार किया था। और उस समय, कल्पना करें कि आप से सवाल करने वाला व्यक्ति आपकी ओर देखकर पूछता है, "तुम्हारा मतलब है, तुमने आज डेविड प्लैट को तुम्हारी कलीसिया सभा में प्रचार करते हुए सुना?" और आपने कहते हैं, "हाँ," और वह कहता है, "तुम्हारा कहना है डेविड प्लैट ने प्रचार किया था?" आप कहते हैं, "हाँ," और वह कहता है, "तुम्हारा मतलब है, डेविड प्लैट और तुम सुबह उनके साथ थे?" आप कहते हैं, "मैं उन्हीं के साथ था। ऐसा होता है, मेरे साथ बने रहें।

और कल्पना करें कि उस समय वह कहता है, "वाह! वह लम्बे कद का मजबूत व्यक्ति, साँवले रंग वाला जो ऐसा लगता है कि हर समय व्यायाम करता है, जो एक पेशेवर खिलाड़ी और फिल्म अभिनेता के बीच का सा व्यक्ति लगता है?"

अब, इस समय उस सवाल का जवाब देने के लिए आपके पास दो विकल्प हैं। एक तरफ आप कह सकते हैं, "मैं ने जिस डेविड प्लैट को देखा वह ऐसा नहीं था। मैं ने एक दुबले–पतले, मुड़े हुए पैरों वाले एक बालक को देखा जिसे देखकर लगता था कि वह अभी हाई स्कूल से निकला है।" या दूसरा विकल्प जब वह आप से कहता है, "वह लम्बे कद का मजबूत व्यक्ति, साँवले रंग वाला जो ऐसा लगता है कि हर समय व्यायाम करता है, पेशेवर खिलाड़ी और फिल्म अभिनेता जैसा लगता है," तो आप उनकी ओर देखकर कह सकते हैं, "हाँ, यदि तुम ऐसा मानते हो कि डेविड प्लैट ऐसा है।"

बात यह है, मैं पुनः व्याख्या के लिए तैयार नहीं हूँ और यदि मैं पुनः व्याख्या के लिए तैयार नहीं हूँ तो यीशु मसीह भी नहीं है। हम गलत हैं यदि हम सोचते हैं कि हम दृश्य में आ सकते हैं, और यह सैंकड़ों–हजारों वर्षों से किया जा रहा है और इस बात को पुनः परिभाषित करने की कोशिश की जा रही है कि यीशु कौन है।

मैं पवित्रशास्त्र के एक परिच्छेद में आपको यीशु की एक तस्वीर दिखाना चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ आप उस तस्वीर को देखें कि यीशु वास्तव में कौन है; न कि यह कि मैं उसके बारे में क्या कहता हूँ; या दूसरे लोग क्या कहते हैं। मैं चाहता हूँ आप देखें कि बाइबल क्या कहती है कि यीशु कौन है, और मैं चाहता हूँ आप इस तस्वीर को देखें क्योंकि यदि हम उस तस्वीर और चित्र को देख लेते हैं कि यीशु कौन है तो हम

देखेंगे कि वह सम्मोहक है। और हमें यह अहसास होगा कि वह हमारी कलीसियाई उपस्थिति से अधिक के योग्य है, वह हमारी औपचारिक भक्ति से अधिक के योग्य है, हमारे औसत समर्पण से अधिक के योग्य है, वह हमारे सम्पूर्ण जीवनों के योग्य है। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ प्रकाशितवाक्य 5 में इसे देखें।

यीशु के बारे में ऐसा अद्वितीय क्या है?

मैं चाहता हूँ कि हम एक मुख्य प्रश्न के बारे में सोच–विचार करें। यीशु के बारे में ऐसा अद्वितीय क्या है? मानवीय इतिहास में बहुत से धार्मिक गुरू और अगुवे हुए हैं। यीशु के बारे में ऐसा अद्वितीय क्या है? मैं आपको यीशु की चार विशेषताएँ दिखाना चाहता हूँ कि वह कौन है। और, मेरा विश्वास है कि इन विशेषताओं को देखने के बाद हम उन चार कारणों को भी देखेंगे कि यीशु हमारे पूर्ण समर्पण के; हमारे सम्पूर्ण जीवनों के योग्य क्यों है? मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ इसमें डुबकी लगाएँ।

यीशु अन्तिम समस्या को जानता है।

प्रकाशितवाक्य 5: यीशु के बारे में ऐसा अद्वितीय क्या है? मैं चाहता हूँ आप देखें कि यीशु अन्तिम समस्या को जानता है, और यही उसे दूसरे सब लोगों से अलग करता है। मेरे साथ प्रकाशितवाक्य 5:1 देखें।

अब, यहाँ यूहन्ना हमें अपने दर्शन के बारे में बताता है लेकिन यह वास्तव में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और तक कि सम्पूर्ण बाइबल का एक विवरण है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि क्या होता है। वह कहता है, *"और जो सिंहासन पर बैठा था,"* – यानि परमेश्वर – *"मैं ने उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी, जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी। फिर मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊँचे शब्द से यह प्रचार करता था कि इस पुस्तक के खोलने और उस की मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?"* (प्रकाशितवाक्य 5:1) अब, इस परिच्छेद में जो हो रहा है, उसे समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि पुस्तक में क्या है। अतः, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ एक पुस्तक की कल्पना करें।

पवित्रशास्त्र बताता है कि उसमें दोनों ओर लिखा था, संभवतः एक बड़ी पुस्तक है। लेकिन आपको समझाने के लिए, यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है और उसके बाहर एक मोहर होती थी। और जब वह व्यक्ति आता जो उस मोहर को तोड़ने के योग्य या पूरा करने में समर्थ हो जो पुस्तक के अन्दर लिखा हुआ है, तो वह आकर पहली मोहर को तोड़ता और तब वे पुस्तक को खोलकर उसमें लिखी हुई बातों को पढ़ते थे और

वही उसे पूरा करने का तरीका होता था। तब यह जीवन्त होता है, यथार्थ बनता है। अतः, स्पष्ट है कि मोहर को तोड़ने वाला व्यक्ति वास्तव में महत्वपूर्ण होना चाहिए।

लिखा है, "इस पुस्तक में सात मुहरें थी" और आप को यह तस्वीर मिलती है कि कोई आकर पहली मुहर को तोड़ता है और उसमें लिखा हुआ पूरा होते देखता है और फिर जब उसे खोला जाता है तो आप दूसरी मुहर पर आते हैं। आपको उसे तोड़ने में सक्षम होना है और फिर, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी, और फिर, सातवीं मुहर।

अगले अध्याय, प्रकाशितवाक्य 6 पर आइए। यह पहले वचन से साफ होने लगता है। देखें बाइबल क्या कहती है, *"फिर मैं ने देखा, कि मेमने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला,"* (प्रकाशितवाक्य 6:1), और यह बताता है कि क्या हुआ। पद 3 में देखें, *"जब मेमने ने दूसरी मुहर खोली।"* पद 5, *"जब मेमने ने तीसरी मुहर खोली।"* पद 7, *"जब मेमने ने चौथी मुहर खोली।"* पद 9, *"जब मेमने ने पाँचवीं मुहर खोली।"* पद 12, *"जब मेमने ने छठी मुहर खोली।"* आप प्रकाशितवाक्य 8:1 पर आइए, आप देखते हैं कि जब उसने सातवीं मुहर खोली तो स्वर्ग में लगभग आधे घण्टे तक सन्नाटा छा गया। अध्याय 5 में सवाल यह है, "इस पुस्तक को खोलने और उस की मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?"

अब, हमारे पास प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक का अध्ययन करने का समय नहीं है और इन अगले अध्यायों का भी कि इस पुस्तक में आगे क्या है, लेकिन मैं आपको एक तस्वीर देना चाहता हूँ कि प्रकाशितवाक्य 5 में पुस्तक की दोनों ओर जो लिखा है, वह संक्षेप में परमेश्वर का उद्देश्य, सारी सृष्टि के लिए परमेश्वर का उद्देश्य है।

हम जानते हैं कि इससे पहले उत्पत्ति 3 में पाप संसार में आया और पाप ने परमेश्वर की सृष्टि को विकृत कर दिया, जिसके हम सब दोषी हैं। मैं जानता हूँ कि हम में से हर एक जीवन में पाप है। और इसीलिए हम संसार में उसके प्रभावों को कष्ट, और दर्द के रूप में देखते हैं और पाप के परिणामस्वरूप हमें बहुत कुछ सहना पड़ता है, यहाँ तक कि जब हम भलाई करने की कोशिश करते हैं तब भी हमें कष्ट सहना पड़ता है।

उत्पत्ति 3 से इस बिन्दू तक हमें यही तस्वीर मिलती है। अब हमें परमेश्वर के अन्तिम उद्देश्यों की जानकारी मिल गई है। वह उसे कैसे समाप्ति की ओर लाएगा, अपने लोगों के लिए कष्ट और दर्द और बुराई का

अन्त कैसे करेगा। कैसे वह अनन्तकाल के अपनी आशीष अपने लोगों पर उण्डेलेगा और उसका न्याय भी और यही सब उस पुस्तक में लिखा है– सारी सृष्टि के लिए परमेश्वर के अन्तिम उद्देश्य।

अतः, यह बहुत बड़ी बात है। आपका अनन्तकाल, मेरा अनन्तकाल; उससे बँधा है जो उस पुस्तक में लिखा है जो परमेश्वर के हाथ में है।

अब, शायद आप में से कुछ लोग सोच रहे होंगे, "डेव, परमेश्वर ने स्वयं उस पुस्तक को क्यों नहीं खोला?" मैं चाहता हूँ हमें इसका अहसास हो कि इसका क्या मतलब होता। यदि परमेश्वर, जो पूर्णतः पवित्र है और जिसमें कोई पाप नहीं है, यदि वह उस पुस्तक को खोलता जिसमें उसकी सारी सृष्टि के लिए उसके चरित्र के उद्देश्यों को प्रकट किया जाने वाला है और यदि हम सब उसके सामने हमारे जीवन के पापों के साथ खड़े हैं और हमने उसकी आज्ञा को तोड़ा है, तो हमारे लिए पूरे अनन्तकाल के लिए केवल एक ही विकल्प होता, और वह विकल्प है? न्याय और दण्ड। यह पूरी बाइबल में स्पष्ट है। हमारे जीवन के पाप के फलस्वरूप हम एक पवित्र परमेश्वर से अलग हो गए हैं और ब्रह्माण्ड की अन्तिम समस्या, कृपया इससे न चूकें, ब्रह्माण्ड का अन्तिम सवाल यह है, "हमारे जैसे पापी एक पवित्र परमेश्वर के सामने धर्मी कैसे ठहर सकते हैं?"
हम स्वर्ग के बारे में बहुत सामान्य ढंग से बात करते हैं। हमें यह समझना है कि परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्तकाल को बिताने के लिए, पहले पाप की समस्या से निपटना जरूरी है। अतः, हम नहीं चाहते कि उस समस्या से निपटने वाले मध्यस्थ के बिना परमेश्वर स्वयं उस पुस्तक को खोले। अतः, मैं चाहता हूँ हम इसे देखें कि <u>हमारे पाप के कारण हम एक पवित्र परमेश्वर के सामने</u>, इस परिच्छेद में हम दो बातों को देखते हैं। पहली, <u>हम पवित्र परमेश्वर के सामने आशाहीन हैं।</u> और दूसरी, <u>हम पवित्र परमेश्वर के सामने असहाय हैं।</u>

आप देखते हैं आगे क्या होता है, पद 3 कहता है, *"और न स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोलने या उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला।"* और पद 4 कहता है, *"(यूहन्ना) फूट फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक के खोलने, या उस पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला।"* (प्रकाशितवाक्य 5:3–4) हमारे पाप के कारण हम पवित्र परमेश्वर के सामने आशाहीन हैं।

अब, मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ कल्पना करें; यदि इस पुस्तक के अन्दर कष्ट का अन्त है, दर्द का अन्त है, परमेश्वर अपनी सृष्टि को पुनः उस स्वरूप में लाता है जैसा उसने उसे बनाया था। पहली सदी में इसे

पढ़ने की कल्पना करें। ये ऐसे लोग थे जो मसीही होने के कारण बहुत अधिक सताव का सामना कर रहे थे। उन्होंने अपने परिवारों में बहुत से कष्टों का सामना किया था। कुछ की पत्नियाँ मर गई थी, कुछ के पतियों को मार दिया गया था, वे शहीद हो गए थे। उन्होंने अपने बच्चों को अपनी आँखों के सामने खुद से दूर होते हुए देखा था। उन्होंने दर्द को सहन किया था और इस बिन्दू पर यूहन्ना उसे देखता है, जो इन सारी बातों का अन्त कर देगा। परमेश्वर की आशीष सारी बातों को पुनः पहले जैसा करना है, कष्ट और दर्द को समाप्त करना है और वह उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ में देखता है लेकिन कोई उसे खोलने के योग्य नहीं है। इसीलिए हम देखते हैं कि लिखा है, यूहन्ना फूट–फूटकर रोने लगा। यह बहुत बड़ी बात है क्योंकि इस तस्वीर में परिस्थितियों में बदलाव की आशा खत्म हो गई है।

आज हम भी इसी तरह का प्रश्न पूछते हैं। मेरा अनुमान है कि यदि सब नहीं तो भी हम में से अधिकाँश लोगों ने किसी न किसी समय यह पूछा है, "क्या यही सब है?" आपने दर्द को सहन किया है; कष्ट सहा है; कुछ लोगों ने कैंसर का सामना किया है–"क्या यही सब है?" दूसरी बीमारियाँ... प्राकृतिक आपदाएँ... कुछ महीने पहले हमारा घर बाढ़ में बह गया। सुनामी, भूकम्प, युद्ध... आप सोचते हैं, "क्या यही सब है?" एक आशा है कि एक दिन यह बदलेगा, एक बदलाव आएगा और सब कुछ ठीक हो जाएगा। हम इसी आशा को पकड़े हुए हैं। लेकिन यदि कोई भी उस पुस्तक को खोलने के योग्य नहीं है, तो यह आशा पूरी तरह समाप्त हो जाती है। मैं चाहता हूँ आप इस स्थिति की गम्भीरता को देखें।

न केवल आशाहीन लेकिन मैं ने कहा असहाय भी क्योंकि बाइबल कहती है कि हमारे चारों ओर कोई भी इस परिस्थिति में हमारी सहायता करने के योग्य नहीं था। कोई भी परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के योग्य नहीं है, परमेश्वर की उपस्थिति में जाने, साहस के साथ परमेश्वर के पास जाने, उसके हाथों से पुस्तक को लेने और उसे खोलने की कल्पना करें। यह एक साहसी कार्य है। किसे यह अधिकार है? किस में ऐसा करने की योग्यता है? यह एक बड़ा सवाल है।

इस धार्मिक दृश्य में संसार के इतिहास में बहुत से लोग आए हैं–धार्मिक गुरू, धार्मिक अगुवे–और उन्होंने अपनी शिक्षाएँ दी हैं, कुछ को हजारों ने माना है और कुछ को लाखों ने माना है और कहा है, "इसी तरह तुम जीवन को पाते हो।" लेकिन यदि आप इन सारी धार्मिक इतिहास की पुस्तकों को देखते हैं तो आप पाएँगे कि उनमें से कोई भी यह नहीं कहता है कि, "हम पाप की समस्या से छुटकारा पाने में समर्थ हैं जो हमें पवित्र परमेश्वर से दूर करता है।" ऐसे बहुत से शिक्षक हैं, जो कहते हैं, "यह करो या वह करो, अपने आस–पास के लोगों से मेल रखने के लिए यह करो।" लेकिन किसी भी बिन्दू पर आप पाप की समस्या से

छुटकारा नहीं पाते हैं और मैं चाहता हूँ आप इस परिच्छेद में देखें कि यीशु आरम्भ से ही इस समस्या को जानते हैं। हम एक पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे खड़े हो सकते हैं; हम पवित्र परमेश्वर के साथ कैसे रह सकते हैं, यह एक ऐसी समस्या है जो दूसरी किसी भी समस्या से अधिक महत्वपूर्ण है जिसका हम जीवन में कभी भी सामना करेंगे। यह एक निराशाजनक दृश्य है क्योंकि वह देखता है कि, "कोई कुछ नहीं कह रहा है।"

यह एक तरह से मुझे मेरे बचपन की याद दिलाता है। दो सप्ताह पहले भी मेरी पत्नी और मैं हमारे भतीजे और भतीजी को उनके जन्मदिन पर बाहर ले गए। उस जगह आपको पाँच मिनट में ही सिर दर्द होने लगता है, लेकिन उससे भी बढ़कर, एक बच्चे के रूप में आपको याद रहता है कि क्या हुआ था। आप उस स्थान पर जाते हैं, टोकन लेते हैं और कुछ खेल खेलते हैं। आप टोकन डालते हैं और खेल खेलते हैं। अलग–अलग तरह के खेल, आप घण्टों तक खेलते हैं और एक बच्चे के रूप में आप अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं। मुझे याद है मेरी माँ या पापा, गेंद को पकड़ने में मेरी सहायता करते थे और मैं वहाँ तक पहुँच भी नहीं पा रहा था जहाँ आपको अंक मिलते हैं, और अन्ततः जब आप वहाँ पहुँचते हैं और खेलते हैं तो क्या निकलता है? टिकट निकलते हैं।

आप अधिक से अधिक टिकट को पाने की कोशिश करते हैं। आपको बड़ा मजा आता है। आपको, आपकी माँ और आपके पापा को बहुत अच्छा लग रहा है। लेकिन फिर, एक बुरा समय आता है। आप वापस जाने के लिए तैयार हैं। आपने बहुत मस्ती की। आप बाहर निकलने के लिए द्वार की ओर जा रहे हैं और वहाँ पर एक जगह है जहाँ आपको टिकट के बदले में उपहार मिलते हैं। आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ। यह समय आपको डराता है। आपने इन टिकटों को इकट्ठा करने के लिए कठिन मेहनत की है। आपने उन्हें हाथ में पकड़ रखा है। आप वहाँ जाते हैं और ऐसी बहुत सी वस्तुओं को देखते हैं जिन्हें आप लेना पसन्द करेंगे। तुरन्त आपकी आँखें सबसे ऊपर की ओर जाती हैं। ऊपर की अलमारी में एक बहुत बड़ा खिलौना रखा है और उसे अपने कमरे में रखे होने की कल्पना कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए 80,000 टिकट की जरूरत है और आपको यह पता नहीं है।

मैं ने अपनी माँ या पाप की ओर देखा कि, "मुझे वह भालू चाहिए"... "मुझे वह बड़ा खिलौना चाहिए।" वे नीचे की ओर देखते हैं और कहते हैं, "बेटा, तुम्हारे पास उतनी टिकट नहीं है।" और मेरी नजरें निचली अलमारी पर आती हैं। वहाँ लावा लैम्प रखे हैं, आप जानते हैं वे बेकार के खिलौने, लेकिन वे बहुत सुन्दर लग रहे हैं। आप कहते हैं, मुझे वह लैम्प चाहिए। उसके लिए 40,000 टिकट चाहिए। क्या आपको पता है

कि 40,000 टिकटों को पाने के लिए आपको कितने घण्टे खेलना होगा? माँ और पाप मेरी ओर देखते हैं जैसे कह रहे हों, "बेटा, तुम्हारे पास इतनी टिकट नहीं है।"

अतः, मैं थोड़ा और नीचे आता हूँ। रिमोट वाली कार कैसी रहेगी, मैं उसे लूँगा। "बेटा, तुम्हारे पास इतनी टिकट नहीं है।" यह प्रक्रिया चलती रहती है और अन्त में आप अपने सामने रखे एक छोटे से डिब्बे की ओर आते हैं। आप देखते हैं गहरे रंग के रबड़ में एक चमक है और उसके साथ एक पेन्सिल है। आप अपनी टिकटों को अपने पापा या मम्मी को देते हैं, वे उन्हें लेते हैं और यह आपके लिए डरावना है। आपने कई घण्टे वहाँ बिताए और जब आप वहाँ से बाहर निकलते हैं तो आपके हाथ में केवल एक रबड़ और एक पेन्सिल है क्योंकि अलमारी में सबसे ऊपर जो खिलौना रखा है उसे लेने के लिए आपके पास पर्याप्त टिकट नहीं हैं।

अब, प्रकाशितवाक्य 5 में आने पर इस तस्वीर को अपने मन में रखें क्योंकि यहाँ दाँव बहुत ऊँचा है। अलमारी में सबसे ऊपर आपका अनन्तकाल है, मेरा अनन्तकाल है, स्वर्ग, पापों की क्षमा है, आनन्द है, कष्ट और दुख का अन्त है। यह अलमारी में सबसे ऊपर है। अब इस दृश्य में कल्पना करें कि यह सब अलमारी में सबसे ऊपर है, और प्रकाशितवाक्य 5 में दी जाने वाली पुकार की कल्पना करें।

अब्राहम वहाँ खड़ा है, "अब्राहम, क्या तुम्हारे पास वहाँ जाने और पुस्तक को लेने के लिए पर्याप्त टिकट है? तुम परमेश्वर के लोगों के पिता हो। तुमने इस पुस्तक की शुरूआत में यह सब करना शुरू किया था। अब्राहम, क्या तुम्हारे पास पर्याप्त टिकट है?" अब्राहम नीचे की ओर देखता है और कहता है, "मेरे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।"

"मूसा, तुमने परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की, तुम उन्हें वायदे के देश की ओर लाए, तुमने लाल समुद्र के बीच में से उनकी अगुवाई की, तुमने अतुल्य तरीके से परमेश्वर के लोगों की अगुवाई की। निश्चय ही, तुम्हारे पास पर्याप्त टिकट होगी।" मूसा अपना मुँह लटकाकर कहता है, "मेरे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।"

और वे सारे भविष्यद्वक्ता, जिन्होंने अपना जीवन दे दिया– परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण जिन्हें मार दिया गया; यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल। "निश्चित रूप से, तुम में से एक के पास पर्याप्त टिकट होगी। तुमने अपना जीवन दिया है।" वे नजरें नीची करके कहते हैं, "हमारे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।"

"यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, तुमने यीशु के आगमन के लिए मार्ग तैयार किया था। यीशु ने तुम्हारी बहुत प्रशंसा की थी, निश्चित रूप से तुम्हारे पास पर्याप्त टिकट होगी।" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहता है, "नहीं, मेरे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।" "पतरस, इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा? याकूब, यूहन्ना, चेलों में से कोई भी?" "हमारे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।" "पौलुस," उसने आधा नया नियम लिखा था, "तुम आज तक के सबसे महान मिशनरी हो। निश्चित रूप से तुम्हारे पास पर्याप्त टिकट होगी।" पौलुस अपना सिर झुकाकर कहता है, "मेरे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।"

आज के समय पर आते हैं, "मदर टेरेसा, तुमने बहुत भलाई की है और करोड़ों लोगों की देखभाल की है। निश्चित रूप से तुम्हारे पास पर्याप्त टिकट होगी।" मदर टेरेसा नजरें झुकाकर कहती है, "मेरे पास पर्याप्त टिकट नहीं है।" "बिली ग्राहम, तुमने संसार के इतिहास में किसी भी व्यक्ति से अधिक लोगों को सुसमाचार सुनाया है। तुम्हारे पास तो पर्याप्त मात्रा में टिकट जरूर होगी।" बिली ग्राहम भी अपना सिर झुका लेता है और यह चलता रहता है।

किस के पास पर्याप्त टिकट है? कौन वास्तव में परमेश्वर के सिंहासन के पास जाएगा, पुस्तक को उसके हाथ से लेगा, उसकी मुहर को तोड़ेगा और उसे खोलेगा? कौन ऐसा करेगा? ओप्रा, डॉ. फिल, किसी के पास पर्याप्त टिकट नहीं है। स्वर्ग में सन्नाटा छाया है।

अब यह मेरी तथा आपकी ओर आता है। क्या आपके पास पुस्तक को खोलने के लिए पर्याप्त टिकट है? हम में से हर एक व्यक्ति अपना सिर लटकाकर कहेगा, हमारे पास पर्याप्त टिकट नहीं है। और, यहाँ हम इसी तस्वीर को देखते हैं। यह बहुत ही निराशाजनक है। आप में से कुछ लोग सोच रहे होंगे, "तुम धर्मों की बात कर रहे हो, मैं एक नास्तिक हूँ, मैं तो परमेश्वर पर विश्वास ही नहीं करता।"

मेरे विचार से हम आशाहीन और असहाय के बारे में जो बात कर रहे हैं उसका साराँश इस विचार में है। वह भी स्व–घोषित नास्तिक से है। मुझे बट्रेण्ड रसेल के बारे में याद है, जिसने एक पुस्तक लिखी थी, *मैं एक मसीही क्यों नहीं हूँ।* वह 20वीं सदी का प्रसिद्ध नास्तिक है। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, अपनी मृत्यु शैय्या पर उसने ये शब्द कहे। उसने कहा, "मेरे पास पकड़ने के लिए घोर निराशा के अलावा और कुछ नहीं है। क्योंकि यदि परमेश्वर नहीं है और हम हमारी ही सृष्टि के उत्पाद हैं और हम इस चक्र में हैं जहाँ हम कुछ समय के लिए रहते हैं और फिर हम चले जाएँगे और कोई दूसरा आगे बढ़ेगा। यह एक

अन्तहीन चक्र है। कष्ट और दर्द के अन्त की आशा कहाँ है? उसमें आशा कहाँ है, यह आशाहीन और असहाय है।" यहाँ हम इसी तस्वीर को देखते हैं। यीशु अन्तिम समस्या को जानते हैं।

यीशु अन्तिम मूल्य चुकाता है।

दूसरी बातः यीशु अन्तिम मूल्य चुकाता है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि आगे क्या होता है। इस समस्या के साथ हमारे लिए आधार तैयार हो गया है। अब देखें पद 5 में क्या होता है, *"तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरों को तोड़ने के लिए जयवन्त हुआ है।"* (प्रकाशितवाक्य 5:5)

अब हम इस बिन्दू पर एक विरोधाभास को देखते हैं और उससे हम चूक नहीं सकते हैं। एक तरफ हम विजयी सिंह को देखते हैं। यह वो तस्वीर है जो बाइबल हमें यहाँ देती है, यहूदा गोत्र का सिंह। मैं आपको एक अच्छी बात दिखाना चाहता हूँ। यह कुछ ऐसा ही नहीं है जो प्रकाशितवाक्य 5 में प्रकट होता है। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हजारों वर्ष पहले कहा गया था। इसे खुला रखें और मेरे साथ बाइबल की पहली पुस्तक पर आएँ। उत्पत्ति 49 को निकालें। मेरे साथ उत्पत्ति 49 पर आइए। मैं चाहता हूँ आप पढ़ें कि इन सारी बातों की शुरूआत कैसे होती है। बाइबल की पहली पुस्तक में।

हम याकूब द्वारा अपने पुत्रों के बारे में की गई भविष्यद्वाणी या अपने पुत्रों के भविष्य के बारे में बताई गई बातों को पढ़ने जा रहे हैं। उसके एक पुत्र का नाम यहूदा था जिसके बारे में हमने अभी पद 5 में पढ़ा है। "मत रो, देख यहूदा के गोत्र का वह सिंह।" इसका क्या मतलब है? मेरे साथ उत्पत्ति 49 के पद 8 को देखें जहाँ याकूब यहूदा से कह रहा है।

यह प्रकाशितवाक्य 5 की कल्पना करने से भी हजारों वर्ष पूर्व की बात है। इसे देखें, "हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तेरे पिता के पुत्र तुझे दंडवत् करेंगे। यहूदा सिंह का डांवरू है। हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है : वह सिंह वा सिंहनी की नाई दबकर बैठ गया; फिर कौन उसको छेड़ेगा।" (उत्पत्ति 49:8–9) क्या यह सुनने में जाना–पहचाना सा लग रहा है? पद 10 को देखें, *"जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे।"* (उत्पत्ति 49:10)

इससे न चूकें, इस पुस्तक की शुरूआत में ही उस व्यक्ति के बारे में बताया गया है जो यहूदा के वंश से आने वाला है और सब कुछ उसी का है। प्रकाशितवाक्य 5 में हम किस के बारे में बात कर रहे हैं? उसके

बारे में, जो सब कुछ का स्वामी है, सारी जातियाँ उसकी आज्ञा मानेंगी और वह सिंह के समान आएगा। उत्पत्ति 49 यही कहता है। प्रकाशितवाक्य 5 में एक तस्वीर देता है। यूहन्ना एक आवाज को सुनता है जो कहती है, "देख, यहूदा के गोत्र का सिंह; जो दाऊद का मूल है।" यशायाह 11:1 और 10 बताते हैं कि कैसे यीशु दाऊद के वंश में से जो आएगा, जो यहूदा के वंश का है और कैसे दाऊद का मूल, दाऊद की सन्तान होगा। प्रकाशितवाक्य 22:16, अन्तिम पुस्तक, बताती है कि कैसे यीशु दाऊद की सन्तान और दाऊद का मूल है। अतः, यहाँ यीशु वह सिंह है जिसके बारे में बात की जा रही है।

मैं आपको प्रकाशितवाक्य 5 में कुछ और दिखाना चाहता हूँ जो वास्तव में बहुत अच्छा है। मैं आपको यूनानी भाषा की थोड़ी जानकारी देना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आपने यूनानी पाठ की अपेक्षा नहीं की थी लेकिन मैं आपको इस परिच्छेद में एक यूनानी तस्वीर देना चाहता हूँ। इस परिच्छेद में एक यूनानी शब्द है, और मुझे पूरा निश्चय है कि आप उसे जानते हैं। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ पद 5 को देखें। लिखा है, "देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरों को तोड़ने के लिए जयवन्त हुआ है।" (प्रका. 5:5) कुछ अनुवाद कहते हैं, "हावी हुआ है", कुछ कहते हैं, "विजयी हुआ है।"

अब, यहाँ पर मूल भाषा में जिस यूनान शब्द का प्रयोग किया गया है उसे आप सब जानते हैं। मेरे विचार से आप सब नाइकी शब्द को जानते हैं। नये नियम में यहाँ प्रयुक्त शब्द *निकाओ* है, जिसका अर्थ है, हावी होना, जीतना, विजयी होना। इस शब्द का यही मतलब है। इसीलिए उन्होंने इसे कम्पनी के नाम के रूप में चुना है क्योंकि खेलों में हम विजयी होना चाहते हैं, जीतना चाहते हैं। इसलिए वे इसे बेचते हैं, ये नारा देते हैं, "नाइकी खरीदो, तुम्हीं जीतोगे।" मैं ने पहले नाइकी के गोल्फ खेलने वाले जूते पहने हैं और मैं गोल्फ में कभी नहीं जीता हूँ और यह पूरी तरह सफल नहीं होता है लेकिन आप देखें कि इस शब्द का मतलब यही है। यह विजयी होने और हावी होने के बारे में बताता है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह शब्द नाइकी का नहीं है। परमेश्वर ने यहा शब्द खोजा है। और परमेश्वर ने इस शब्द का प्रयोग अपने पुत्र के लिए किया है। उसने कहा, "वह सिंह के समान है और वह हावी होगा, वह विजयी होगा।" आप देखते हैं कि पुस्तक को लेने के लिए आप परमेश्वर की उपस्थिति में चहलकदमी करते हुए जाकर उसे उसके हाथों से ऐसे ही नहीं ले सकते हैं। नहीं, आपको साहस के साथ चलकर जाना होगा क्योंकि आप विजयी हुए हैं।

पहले हम इसी तस्वीर को देखने वाले हैं लेकिन उससे न चूकें जो इसके बाद होता है। यूहन्ना अपनी आँखों से आँसुओं को पोंछ रहा है। उसने यहूदा गोत्र के सिंह के बारे में सुना है। देखें पद 6 में क्या लिखा है, *"और मैं ने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानों एक वध किया हुआ मेमना खड़ा देखाः उसके सात सींग और सात आँखें थी; ये परमेश्वर की सातों आत्माएं हैं, जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं।"* (प्रका. 5:6) अब, यह एक अतुल्य तस्वीर है। यूहन्ना एक सिंह को देखने की अपेक्षा लिए मुड़ता है और वह इस मेमने को देखता है जो ऐसा दिखाई देता है जैसे कि माँस पीसने वाली चक्की में से निकला हो। यह एक वध किए हुए मेमने की भयावह तस्वीर है। अतः मैं चाहता हूँ आप यीशु की इस तस्वीर के दो आयामों को देखें। <u>वह जीतने वाला सिंह है लेकिन वह कष्ट सहने वाला मेमना भी है।</u>

अब, पिछले सैंकड़ों–हजारों वर्षों से लोगों के मन में यीशु के बारे में जो सवाल हैं, उनमें बहुत बार लोग इस तस्वीर में या तो एक तरफ या दूसरी तरफ चले जाते हैं। बहुत से लोग यीशु को एक दुख सहने वाले मेमने के रूप में देखते हैं, जो एक कमजोर, अच्छा व्यक्ति है, लेकिन जिसके पास ज्यादा ताकत नहीं थी, जो लोगों को अपने पीछे नहीं खींच सका। उसने केवल इतना किया कि वह क्रूस पर लटक गया। दूसरी तरफ, ऐसे बहुत से लोग हैं, जो कहते हैं, यीशु एक महान व्यक्ति था, वह एक महान धार्मिक गुरू था जिसके पास अत्यधिक सामर्थ थी लेकिन वे इस तथ्य से इन्कार कर देते हैं कि वह क्रूस पर मरा था।

इसका एक उदाहरण, एक आसान सा उदाहरण, आज हमारे संसार में मुसलमान धर्म है। मुसलमान यह विश्वास नहीं करते हैं कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। वास्तव में, वे इस विचार से घृणा करते हैं। उनका मानना है कि यह एक भयानक विचार है कि यीशु क्रूस पर मर सकता है। मैं ने कई लोगों से बात की है और वे कहते हैं कि उन्हें इस तस्वीर से दो मुख्य समस्याएँ हैं, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। पहली, पहली समस्या यह है कि हम कहते हैं कि यीशु देहधारी परमेश्वर है। "यह पागलपन है," लेकिन इससे भी अधिक पागलपन की बात दूसरी बात है कि, "तुम कहते हो कि देहधारी परमेश्वर क्रूस पर मरता है, इतने क्रूर, अमानवीय तरीके से उसकी हत्या की जाती है। परमेश्वर ऐसा नहीं करेगा।"

मैं ने हाल ही में एक मुसलमान विद्वान द्वारा लिखे शब्दों को पढ़ा, इस मुसलमान विद्वान ने कहा, "हम यीशु का मसीहियों से भी अधिक सम्मान करते हैं। हम यह मानने से इन्कार करते हैं कि परमेश्वर उसे क्रूस पर मरने की अनुमति देगा।"

मैं चाहता हूँ यीशु की इस तस्वीर में आप देखें कि मानवीय इतिहास के परिदृश्य में विजयी सिंह बनने के लिए जरूरी था कि यीशु पहले कष्ट सहने वाले मेमने की भूमिका को निभाए। ये दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। जीतने और परमेश्वर की उपस्थिति में जाकर पुस्तक को लेने के योग्य बनने के लिए उसे आपके और मेरे पापों की कीमत चुकानी थी। हमें पवित्र परमेश्वर से मिलाने का मार्ग तैयार करने के लिए, कष्ट सहने वाले मेमने की भूमिका जरूरी थी। क्रूस उसके लिए एक विकल्प नहीं था। यह दूसरी योजना नहीं थी क्योंकि जैसा सोचा वैसा नहीं हुआ था। यह परमेश्वर की योजना थी कि वह ब्रह्माण्ड में मुनष्य बने और क्रूस के मार्ग पर चले और वहाँ मरकर आपके और मेरे पापों को दूर करने के लिए कीमत चुकाए।

मेरी पत्नी और मैं शहर में थे, और मैं उसे किसी अच्छे स्थान पर ले जाना चाहता था, किसी अच्छे रेस्तराँ में ले जाना चाहता था। मैं ने निर्णय लिया कि उसे मैकडोनाल्ड्स या किसी ऐसी जगह में ले जाने की बजाय मैं उसे किसी अच्छे स्थान पर ले जाऊँगा। हम "ब्रायो" नामक एक रेस्तराँ में गए। बहुत ही अच्छा रेस्तराँ था। मैं मानो कह रहा हूँ, "हेदर, आज मैं तुम्हें एक भोज दे रहा हूँ। आज हमें जो भी चाहिए वह हमें मिलेगा। हम अच्छा समय व्यतीत करेंगे। हमने ऐसा ही किया। हमना अच्छा भोजन खाया।

हम बैठकर अपना भोजन कर रहे थे और अच्छा समय व्यतीत कर रहे थे और हमारा बैरा हमारे पास आकर कहता है, "साहब, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इस रेस्तराँ में एक व्यक्ति है जिसने आपका बिल चुका दिया है।" उसने कहा, "मैं आपको उसका नाम नहीं बता सकता, लेकिन वह आपको उस कार्य के लिए धन्यवाद देना चाहता है जिसे आप पिछले छह या आठ सप्ताहों से कर रहे हैं, और वह आपका बिल चुकाना चाहता है।"

हमने बहुत अच्छा भोजन किया था और उसके लिए बिना कुछ पैसा चुकाए हम बाहर आ गए क्योंकि हमारा बिल चुका दिया गया था। मेरी प्रार्थना है कि आज इससे कहीं अधिक गहराई से आपको यह अहसास हो कि आपके पाप की कीमत मृत्यु है, आपके पाप की कीमत कष्ट है, और ब्रह्माण्ड का परमेश्वर आपके पास आता है, मेरे पास आता है, और वह कहता है, "तुम्हारा बिल चुका दिया गया है।" सम्पूर्ण इतिहास और कोई भी ऐसा नहीं कह सकता है। और कौन है जो उस कीमत को चुकाएगा? कौन उस दण्ड को अपने ऊपर लेगा? और कोई ऐसा नहीं कर सकता। यीशु के बारे में यही अद्वितीय है। केवल वही अन्तिम कीमत को चुकाता है।

यीशु अन्तिम उद्देश्य को पूरा करता है।

तीसरी बातः यीशु अन्तिम उद्देश्य को पूरा करता है। अब, यहाँ पर यह और भी अच्छा हो जाता है जब हम यह सोचने लगते हैं कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है क्योंकि पद 7 में लिखा है, *"उस ने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली।"* (प्रकाशितवाक्य 5:7) इस तस्वीर को समझें। यीशु परमेश्वर की उपस्थिति में जाता है, पुस्तक को लेता है, और इसलिए लेता है क्योंकि वह योग्य है। यह एक अतुल्य तस्वीर है, विशेष रूप से तब, जब हम उस सन्दर्भ को जानते हैं जिसे हमने अभी देखा है।

कल्पना करें। कुछ लोगों ने इसे स्वर्ग का सबसे दुःखद दिन कहा है। इसीलिए यूहन्ना रो रहा है क्योंकि वह इसकी गम्भीरता को समझता है। वह वहाँ खड़ा है, दूसरे किसी भी व्यक्ति के समान उसकी जेब में टिकट है लेकिन कोई भी चुकाने के योग्य नहीं है। और पुस्तक में यह है। अनन्तकाल, पापों की क्षमा, स्वर्ग, आनन्द, अनन्त जीवन, यह सब अलमारी में सबसे ऊपर है; स्वर्ग में पूरी तरह सन्नाटा छाया है क्योंकि कोई भी उस मूल्य को चुकाने के योग्य नहीं है और हम एक आशाहीन अनन्तकाल को वहाँ देखते हैं। इस परिदृश्य में कुछ हलचल होने लगती है और खामोशी टूटने लगती है।

जब आप और मैं अपनी हाथों में इन टिकटों को लेकर ब्रह्माण्ड के परमेश्वर के सामने खड़े हैं और हमारे अन्दर उस कीमत को चुकाने की कोई योग्यता नहीं है, उस पल वह सिंह, यीशु मसीह जो मेमना है आता है और कहता है, "मेरे पास पर्याप्त टिकट है!" वह कहता है, "मेरे पास पर्याप्त है क्योंकि मैं ने तुम्हारे लिए कीमत चुका दी है! तुम्हें अपनी टिकटों के बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, यह सोचने की जरूरत नहीं है कि तुम कितनी भलाई कर सकते हो या इसे कितना कमा सकते हो क्योंकि मैं ने उसे चुका दिया है। मैं ने तुम्हारें पापों की कीमत चुका दी है और मैं परमेश्वर की उपस्थिति में जाने, पुस्तक को लेने और तुम्हें अनन्तकाल के लिए आनन्द और सन्तुष्टि और अनन्त जीवन देने के योग्य हूँ। आनन्द मनाने के लिए इससे बढ़कर और कोई कारण नहीं है।

इसीलिए हम गाते हैं, इसीलिए हम एक साथ आराधना करते हैं। वह मुक्तिदाता हमारी धार्मिक उपस्थिति से अधिक के योग्य है और वह हमारी औपचारिक भक्ति से अधिक के योग्य है, हमारे औसत समर्पण से अधिक के योग्य है। वह हमारे सम्पूर्ण जीवनों के योग्य है।

यीशु अन्तिम रूप से स्तुति के योग्य है।

यीशु अन्तिम समस्या को जानता है, वह उस कीमत को चुकाता है। वह सम्पूर्ण उद्देश्य को पूरा करता है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि यीशु अन्तिम स्तुति के योग्य है। परमेश्वर हमारी सहायता करे। परमेश्वर हमारी

संस्कृति में हमारी सहायता करे कि हम इस राजा के साथ, इस मुक्तिदाता के साथ, इस प्रभु के साथ, औपचारिक न बनें। वह किसी स्थान पर जाने के लिए हमारे तैयार होने से और कुछ गीतों को गाने और वापस घर लौट जाने से कहीं बढ़कर योग्य है। वह सब कुछ के योग्य है।

इसके बाद में इस परिच्छेद में क्या होता है। पद 9 को देखें। लिखा है, *"और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक को लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।"* (प्रकाशितवाक्य 5:9) इससे न चूकें। उस दिन हमारी आराधना नई होगी। क्योंकि इस गीत को स्वर्ग में कभी नहीं गाया गया था, इससे पहले पवित्रशास्त्र में कहीं नहीं गाया गया था। क्रूस पर किए गए अपने कार्य के कारण जब यीशु पुस्तक को लेता है और ये सारी बातें खुलती हैं, और वह गीत कहता है, "तू ने हमारे लिए छुटकारे को, हमारी मुक्ति को मोल लिया है।"

हमारी आराधना नई होगी, और इससे न चूकें, हमारी आराधना कभी समाप्त न होगी। उसके बाद क्या होता है? *"और जब मै ने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों की चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिन की गिनती लाखों और करोड़ों की थी।"* (प्रकाशितवाक्य 5:11) स्वर्गदूत अपना कार्य आरम्भ कर रहे हैं। *"और वे ऊँचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेमना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।"* (प्रकाशितवाक्य 5:12) फिर हम उनके साथ जुड़ते हैं, *"फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेमने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे। और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् किया।"* जिसका मतलब है, पूरा हुआ, समाप्त हुआ, और उन सबने आराधना की और यह रूकी नहीं और यह रूकेगी नहीं।

इतिहास में एक दिन आने वाला है जब हम में से हर एक व्यक्ति उस मेमने के सिंहासन के सामने खड़ा होगा जो वध हुआ था और जिसने अन्तिम युद्ध को जीत लिया था और हम कहेंगे कि वह योग्य है। सवाल यह है, "क्या इसे हम अभी करेंगे या तब जब बहुत देर हो चुकी होगी?" चाहे आपका दिल कितना कठोर क्यों न हो, चाहे आप कितनी ही बार यह क्यों न कहें कि, "मैं इस यीशु को अपना प्रभु नहीं कहूँगा।" एक दिन आएगा जब हम में से हर एक व्यक्ति अपना घुटना टेकेगा और उसे प्रभु कहेगा क्योंकि वह योग्य है और यही उसे इतिहास में अन्य किसी भी व्यक्ति से अलग करता है।

इस तस्वीर को देखें। मेरा विश्वास है हम देखेंगे कि वह सम्मोहक है। हम उस मेमने के बारे में क्यों बात करेंगे यदि वह वध हो गया है, कितनी भयावह तस्वीर है, लेकिन इससे न चूकें, क्या आपने पद 6 में देखा है, यूहन्ना कहता है, " मैं ने मानों एक वध किया हुआ मेमना खड़ा देखा।" मेमना क्या कर रहा है? अपनी बाइबल में इसे रेखांकित करें। मेमना झुका हुआ नहीं है, मेमना गिरा हुआ नहीं है, कष्ट के कारण टूटा नहीं है। मेमना क्या कर रहा है? वह खड़ा है, मेमना खड़ा है, ऐसा लग रहा है मानो वह वध हुआ हो। कैसी अतुल्य तस्वीर है। वह परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़ा है। आप जानते हैं, क्यों? मेमना कैसे खड़ा है? क्या वध किया हुआ मेमना खड़ा हो सकता है?

निर्गमन 12 में महीने के दसवें दिन एक मेमने को घर में लाया जाता था और वे चार दिन उस मेमने के साथ व्यतीत करते थे। और जब वे आपस में घुलमिल जाते, जैसे हम अपने पालतू पशु से घुलमिल जाते हैं, तो चौथे दिन, महीने के चौदहवें दिन, वे उस मेमने को वध करते थे। उस मेमने का लहू उस कीमत का प्रतीक था जो हमारे पापों के बदले में हमें चुकानी थी। बाइबल की शुरूआत में परमेश्वर यही तस्वीर देता है। और यहाँ अन्त में भी यही तस्वीर वापस आती है। और इससे न चूकें। मेमना वध हुआ था। वह क्रूस पर मर गया था। लेकिन मेमना वहाँ पड़ा नहीं है। मेमना वहाँ खड़ा है क्योंकि अब वह क्रूस पर नहीं है, वह जी उठा है!

यह मेमना जो वध हुआ था, वह सिंह है जो विजयी हुआ है और वह परमेश्वर के सिंहासन के पास खड़ा है और वह हमारी सारी स्तुति के योग्य है!

मैं चाहता हूँ आप उस पर मनन करें जिसे हमने इस परिच्छेद में परमेश्वर की ओर से देखा है और मैं आप से एक अन्तिम सवाल पूछना चाहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यह ब्रह्माण्ड का अन्तिम सवाल है। चाहे हम बच्चे हों, बड़े हों, छात्र हों, या बुजुर्ग हों, मेरे विचार से हम में से हर एक व्यक्ति को हमारे जीवन के किसी न किसी बिन्दू पर इस सवाल का जवाब देना होगा। सवाल यह है, "क्या यीशु आपके जीवन का स्वामी है?"

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net